==

AVYAKT MURLI

14 / 07 / 74

==

14-07-74 ओम शान्ति अव्यक्त बापदादा मधुबन

बाप के समान सफलता-मूर्त बनने के लिए सर्व के प्रति शुभ भावना

सफलता के सितारे बनाने वाले तथा सम्पूर्ण लक्ष्य की प्राप्ति कराने वाले हर आत्मा के शुभ चिन्तक शिव बाबा ने ये मधुर महावाक्य अपनी धरती के रूहानी सितारों रूपी बच्चों के सम्मुख उच्चारे-

आज इस सभा के बीच, बाप-दादा तीन प्रकार के सितारे देख रहे हैं। ज्ञान-सितारे तो आप सभी हो परन्तु ज्ञान सितारों में भी तीन प्रकार कौन-कौन से हैं? एक हैं सफलता के सितारे, दूसरे हैं लक्की सितारे और तीसरे हैं उम्मीदों के सितारे। हरेक सितारे की, अपनी-अपनी दुनिया है। क्या आप सभी ने अपनी-अपनी दुनिया देखी है या सिर्फ अपने आप को ही देखा है? दुनिया अर्थात् रचना। क्या आपको, अपनी रचना दिखाई देती है? क्या जानते हो कि रचना में कितनी और क्या-क्या बातें देखी जाती हैं? आप अपनी रचना को तो देखते होंगे ना? जो बाप की रचना, सो आपकी रचना। आप तो मास्टर रचयिता हो ना? आपने बाप की प्रजा पर ही तो राज्य

नहीं करना है ना? आप मास्टर रचयिता नहीं बनते हो क्या? सदा रचना ही रहेंगे क्या? रचना अर्थात् अपनी राजधानी तो बना रहे हो ना? राजधानी में भी नम्बरवार तो होते हैं ना? वह भी किस आधार से होते हैं और उनमें भी, आपके ही भक्त हैं। शक्तियों के भक्त और बाप के भक्त अलग-अलग हैं।

आपके भक्त कौन बनेंगे, किस हिसाब से आपके भक्त बनेंगे? जिन आत्माओं को, जिन श्रेष्ठ आत्माओं द्वारा व निमित्त बनी हुई आत्माओं द्वारा कुछ-न-कुछ प्राप्ति का अनुभव होता है, उन द्वारा कोई साक्षात्कार होता है और या कोई वरदान प्राप्ति का अनुभव होता है, तो उस आधार पर, वह उनकी प्रजा और भक्त बनते हैं। जो समीप आत्माएं होती हैं; जिन आत्माओं का, बाप से सम्बन्ध भी जुट जाता है और साथ-साथ बाप द्वारा वर्से के अधिकारी भी बनते हैं, वे रॉयल फैमिली में आते हैं। एक ही समय में, हरेक आत्मा, अपनी रॉयल फैमिली बना रही है अर्थात् वह भविष्य सम्बन्ध व राजघराना भी बना रही है; प्रजा भी बना रही है और भक्त भी बना रही है। भक्तों और प्रजा की निशानी क्या होगी? राज्य के सम्बन्ध में आने की बात तो सुनाई, परन्तु प्रजा और भक्त इन दोनों में अन्तर क्या होगा? प्रजा केवल ज्ञान और योग की प्राप्ति करने की पुरुषार्थी होगी, वह सम्बन्ध में समीप नहीं होगी, लेकिन दूर के सम्बन्ध में जरूर होगी। वह मर्यादा पूर्वक जीवन बनाने में, यथायोग्य तथा यथा-शक्ति पुरुषार्थी होगी, बाकी और भी जो दूसरे सब्जेक्ट्स हैं-धारणा और ईश्वरीय सेवा- उनमें भी

यथा-शक्ति सहयोगी होगी, लेकिन सफलतामूर्त नहीं होगी। इसीलिए वह सोलह कला सम्पूर्ण नहीं बन पाती। कोई-न-कोई संस्कार व स्वभाव का वशीभूत होने का कारण, निर्बल आत्मा हाईजम्प नहीं दे सकती। इसलिए रॉयल परिवार में व राजकुल में आने का बजाय वह रॉयल प्रजा बन जाते हैं। रॉयल कुल नहीं, रॉयल प्रजा बाकि भक्त जो होंगे वह कभी भी, स्वयं को अधिकारी अनुभव नहीं करेंगे। उनमें अन्त तक, भक्तपन का संस्कार रहेंगे और वे सदा मांगते ही रहेंगे आशीर्वाद दो, शक्ति दो, कृपा करो, बल दो, या दृष्टि दो आदि। ऐसे माँगने का संस्कार व आधीन होने का संस्कार उनके लास्ट तक दिखाई देंगे। वे सदैव जिज्ञासु रूप में ही रहेंगे। उन्हें बच्चपन का नशा मालिकपन का नशा, और मास्टर सर्वशक्तिमान् का नशा धारण कराते भी वे धारण नहीं कर सकेंगे। वे थोड़े में ही राज़ी रहने वाले होंगे यह है भक्तों की निशानी। अभी इससे देखो कि प्रजा और भक्त कितने बने हैं? भक्त कभी भी डायरेक्ट बाप के कनेक्शन में आने की शक्ति नहीं रखते वे सदा आत्माओं के सम्बन्ध में ही संतुष्ट रहते हैं। उनके बार-बार यही बोल रहेंगे आप ही हमारे लिए सब-कुछ हो, आपके पास ऐसे भक्त भी आवेंगे। न चाहते हुए भी हरेक निमित्त बनी हुई आत्माओं की प्रजा और भक्त बनते ही रहते हैं। अब समझा! आपकी दुनिया व रचना क्या है? आगे चलकर हरेक को यह साक्षात्कार भी होगा कि मैं किस राजधानी में राज्यपद पाने वाली हूँ या पाने वाला हूँ।

अच्छा, यह तो हुई सितारों की दुनिया अर्थात् उनकी रचना। सितारों में, पहला नम्बर सितारा हैं-सफलता का सितारा। सफलता का सितारों की निशानी क्या है कि जिससे कि स्वयं को चैक कर सको कि मैं सफलता का सितारा हूँ या होवनहार सितारा हूँ? लक्की सितारों की निशानी और उम्मीदवार सितारों की निशानी क्या है? अपने आप को जानते हुए भी, बाप-दादा नॉलेज का दर्पण द्वारा तीन स्टेजिस का साक्षात्कार कराते हैं। साक्षात्कार करना तो सब चाहते हो ना? दिव्य- दृष्टि से नहीं, तो नॉलेज का दर्पण द्वारा तो कर सकते हो ना? सफलता का सितारों की निशानी यह है कि उनका हर संकल्प में दृढ़ता होगी की सफलता अनेक बार हुई है और अभी भी हुई पड़ी है। होनी चाहिए, होगी या नहीं होगी यह स्वप्न में भी कभी उनकी स्मृति में नहीं आयेगा। बल्कि उन्हें शत-प्रतिशत निश्चय होगा कि सफलता हमारी हुई ही पड़ी है। उनका हर बोल की यह विशेषता होगी-कि वे हर बात में निश्चय-बुद्धि होंगे और उनके बोल में, ईश्वरीय सन्तान की खुमारी दिखाई देगी अर्थात् उनमें ईश्वरीय नशा दिखाई देगा। उनमें देह-अभिमान का नशा नहीं दिखाई पड़ेगा। उनके बोल द्वारा संशय बुद्धि वाला भी, निश्चय बुद्धि हो जायेगा; क्योंकि उन्हें एक तो ईश्वरीय खुमारी होती है और दूसरा उनका हर बोल शक्तिशाली होता है। उनके बोल साधारण व व्यर्थ नहीं होते और उनका हर कर्म तो श्रेष्ठ होता ही है, लेकिन उनमें विशेषता यह होगी कि उनका हर कर्म द्वारा, अनेक आत्माओं का पथ-प्रदर्शन होगा। जो गायन भी है कि 'जैसे कर्म हम करेंगे, हमको

दख और सभी करेंग ऐस उनक हर कर्म, अनक आत्माओं को, एक पाठ पढ़ान क निमित्त बन जावेंग और उनका हर कर्म शिक्षा-स्वरूप होगा। इसको ही कहा जाता है-समर्थ-कर्म। ऐस संकल्प, बोल और कर्म वाला ही हर बात में सदा स्वयं स सन्तुष्ट होगा। सन्तुष्ट होन क कारण ही वह हर्षित भी होगा लकिन उस हर्षित बनाना नहीं पड़गा बल्कि वह स्वत: ही सदा हर्षित होगा।

ऐस सफलतामूर्त स अन्य आत्मायें भी सदा संतुष्ट रहेंगी अर्थात् उन सर्व की संतुष्टता की सफलता, प्रत्यक्ष फल क रूप में दिखाई दगी। भविष्य फल नहीं, बल्कि प्रत्यक्ष फल ऐस सदा हर्षित आत्मा को दख कर, अन्य आत्मायें भी, उनक प्रभाव स दु:ख व उलझन की लहर स बदल कर हर्षित हो जावेंगी। अर्थात् ऐसी आत्मा क सम्पर्क में और उसक समीप आन स अन्य आत्माओं पर भी हर्ष का प्रभाव पड़ जायगा। जैस सूर्य क समीप व सम्मुख जान वाल क ऊपर, न चाहत भी किरणें पड़ती रहती हैं। ऐस ही सफलतामूर्त क हर्ष की किरणें, अन्य आत्माओं पर भी पड़ती हैं अर्थात् जैस कि बाप क संग का रंग, एक सक्कण्ड में अनुभव करत हो। अर्थात् जब योग-युक्त होत हो तो बाप का संग लगता है तो उसक रंग का अनुभव होता ना? ऐस ही सफलता क सितारों क संग का रंग, अन्य आत्माओं को भी अनुभव होता है। यह है सफलतामूर्त व सफलता क सितारों की निशानी।

दूसर□हैं लक्की सितार□। उसकी निशानी क्या होगी? लक्की सितार□विशेष रूप स□बाप क□ स्नेही, बाप क□ चरित्र, बाप क□ सर्व-सम्बन्धों क□ रस में ज्यादा मग्न रहत□हैं। उनक□ संकल्प भी ज्यादा शक्तिशाली नहीं, लेकिन स्नेही होंगे। उनकी स्मृति रूप में भी बाप क□ मिलन और बाप क□ चरित्रों का ज्यादा वर्णन रहेगा। उनकी बीज रूप स्टेज कम रहेगी, लेकिन अव्यक्त मिलन, अव्यक्त स्थिति और स्नेह भरी रूह रूहान इसमें व□ज्यादा रहेंगे। ऐसी आत्माओं को स्नेह क□ कारण और संग तोड़, एक संग सर्व-सम्बन्ध निभान□क□ कारण ही सहयोग प्राप्त होता है। उन्हें बाप क□ सहयोग क□ कारण मेहनत कम करनी पड़ती है और प्राप्ति अधिक होती है। वह सदैव ऐसा अनुभव करत□हैं कि मेरा लक्क अच्छा है; मुझ□बाप की एकस्ट्रा मदद है और मैं तो पार हो ही जाऊंगी। मेर□जैसा स्नेह किसी का भी नहीं है। सहयोग होन□क□ कारण, उनक□ बोल फलक क□ होत□हैं। पहल□नम्बर वाल□में झलक होती है, दूसर□नम्बर वाल□में झलक नहीं बल्कि फलक होती है। वह बाप समान होत□हैं और यह बाप स्नेही होत□हैं। लेकिन सहयोग क्यों और किस आधार पर मिला या व□लक्की भी क्यों बने? इसका मूल आधार, सर्व-सम्बन्ध तोड़ एक संग जोड़ना, इस सम्बन्ध में व□अटूट और अटल हैं। इस कारण उनको लक्की कहा जाता है। सफलतामूर्त क□ बोल होंग□यह तो हुआ ही पड़ा है और लक्की सितारों क□ बोल होंग□हाँ मैं समझता हूँ यह अवश्य होगा, बाप मददगार बनेगा-यह है दूसरी स्टेज।

तीसर□हैं उम्मीदवार सितार□ ऐसी आत्मायें, सदा सफलता प्राप्त न होन□क□ कारण, उम्मीद रखती हैं, कि करूँगा जरूर, पहुँचूँगा जरूर वा बनूंगा जरूर; ल□किन बीच-बीच में कही रूकत□भी है, अटकत□भी हैं और कभी-कभी व□ दिलशिकस्त भी होत□हैं। अनक□ प्रकार क□ भिन्न-भिन्न विघ्न आन□क□ कारण, कभी व□घबरात□हैं और कभी व□महावीर बन जात□हैं। कभी बाप क□ मिलन का उन्हें नम्बर मिलता है और कभी उन्हें मह□नत क□ बाद मिलता है। इसलिए उनका तीसरा नम्बर कहलाया जाता है। वह सदा हर्षित नहीं रह□गा और वह सदा संतुष्ट भी नहीं रह□गा। ल□किन, उम्मीद कभी नहीं छोड़□गा। वह इस निश्चय स□भी कभी डगमग नहीं होंग□कि मैं बाप का हूँ। ल□किन निर्बल होन□क□ कारण, व□कभी-कभी दिलशिकस्त हो जात□हैं। यह हैं उम्मीदवार सितार□ समझा! अब अपन□ज्ञान-दर्पण में द□खना है कि मैं कौन हूँ यही पहल□ी हल करन□आय□थ□ना? और अब अन्त में भी यही पहल□ी हल करनी है कि मैं कौन हूँ? लक्ष्य सफलता का सितारा बनन□का रखना है; क्योंकि बाप-समान बनना है। सिर्फ बाप स्न□ही बनन□स□खुश नहीं रहना है।

बाप-समान बनान□क□ लिय□व सफलतामूर्त बनन□क□ लिय□आज आपको दो बातें सिर्फ दो शब्दों में सुनात□हैं। दो शब्द धारण करना तो सहज है ना? सदैव सर्व-आत्माओं क□ प्रति, सम्पर्क में आत□हुए, सम्बन्ध में आत□हुए और सम्प□ा में आत□हुए अपनी शुद्ध भावना रखो। शुभ भावना और शुद्ध कामना। चाह□आपक□ सामन□कोई भी परीक्षा का रूप आव□और चाह□

डगमग करन□क□ निमित्त बन कर आव□ल□किन हरक□ आत्मा क□ प्रति आप शुभ कामना, और शुद्ध भावना यह दो बातें हर संकल्प, बोल और कर्म में लाओ, तो आप सफलता क□ सितार□बन जायेंग□ यह तो सहज है ना? ब्राह्मणों का यही धर्म और यही कर्म है। जो धर्म होगा वही कर्म होगा। बाप की हर बच्च□क□ प्रति यही शुभ कामना और शुद्ध भावना है कि वह बाप स□भी ऊंच बन□ इस कारण जब छोटी-छोटी बातें द□ख□त□व सुनत□हैं, तो समझत□है कि अब उसी घड़ी स□सब सम्पन्न हो जावें। मास्टर सर्वशक्तिमान् यदि व□दृष्टि व वृत्ति की बात कहें तो क्या शोभता है? अर्थात् सर्वशक्तिमान् बाप क□ आग□मास्टर सर्वशक्तिमान् कमजोरी की बातें करत□हैं तो इसलिए अब बाप इशारा द□त□हैं कि अब मास्टर बनो, क्योंकि स्वयं को बनाकर फिर विश्व को भी बनाना है। समझा!

ऐस□समझदार बच्च□सुनना और करना समान बनान□वाल□हर संकल्प व हर बोल में बाप-दादा को फॉलो करन□वाल□सफलता क□ सितार□लक्की और उम्मीदवार सितार□लक्ष्य को सम्पूर्ण पान□क□ अधिकारी बच्चों को बाप-दादा का याद प्यार, गुडनाइट और नमस्त□

इस मुरली का सार

1. जो समीप की आत्माएं होती हैं; जिन आत्माओं का बाप स□सम्बन्ध भी जुट जाता है और साथ-साथ वर्से क□ अधिकारी भी बनत□हैं व□रॉयल फ□मिली अर्थात् राज परिवार में आत□हैं।

2. प्रजा ज्ञान-योग की पुरुषार्थी होगी, लेकिन वह सम्बन्ध में समीप नहीं होगी। धारणा एवं ईश्वरीय सेवा में यथा-शक्ति सहयोगी होगी, किन्तु सफलतामूर्त नहीं होगी और वह किसी संस्कार व स्वभाव के वशीभूत होगी।

==========

QUIZ QUESTIONS

==========

प्रश्न 1 :- आज बाबा ने सफलता के सितारों की निशानी क्या बताई है?

प्रश्न 2 :- लक्की सितारों प्रति बाबा आज क्या बता रहे हैं?

प्रश्न 3 :- आपके भक्त कौन बनेंगे किस हिसाब से आपके भक्त बनेंगे?

इस महावाक्य के द्वारा बाबा ने बच्चों को कौन सा गुह्य राज बताया है?

प्रश्न 4 :- सफलतामूर्त बनने के लिये बाबा कौन सी दो बातों को धारण करने की बात कर रहे हैं?

प्रश्न 5 :- प्रजा और भक्त इन दोनों में अन्तर क्या होगा?

FILL IN THE BLANKS:-

{ सूर्य, अधिकारी, संस्कार, भक्तपन, दिलशिकस्त, नॉलेज, किरणें, निर्बल, साक्षात्कार, सम्मुख, हर्षित, संतुष्ट, उम्मीदवार सितारे, दर्पण, उम्मीद }

1 बाप-दादा ________ के ________ द्वारा तीन स्टेजिस का ________ कराते हैं।

2 ________ के समीप व ________ जानेवाले के ऊपर, न चाहते भी ________ पड़ती रहती हैं।

3 वह इस निश्चय से भी कभी डगमग नहीं होंगे कि मैं बाप का हूँ। लेकिन ________ होने के कारण, वे कभी-कभी ________ हो जाते हैं। यह हैं ________।

4 वह सदा ________ नहीं रहेंगे और वह सदा ________ भी नहीं रहेंगे। लेकिन ________ कभी नहीं छोड़ेंगे।

5 भक्त जो होंगे वह कभी भी, स्वयं को ________ अनुभव नहीं करेंगे। उनमें अन्त तक, ________ के ________ रहेंगे।

सही गलत वाक्यो को चिन्हित करे:-

1 :- भक्त कभी भी डायरेक्ट बाप के कनेक्शन में आने की इच्छा नहीं रखते हैं।

2 :- लक्ष्य सफलता का सितारा बनन□का रखना है; क्योंकि बाप-समान बनना है। सिर्फ बाप स्नही बनन□स□खुश नहीं रहना है।

3 :- न चाहत□हुए भी हरक निमित्त बनी हुई आत्माओं की प्रजा और भक्त बनत□ही रहत□हैं।

4 :- प्रजा क□ल ज्ञान और योग की प्राप्ति करन□की पुरुषार्थी होगी, वह सम्बन्ध में दूर नही होगी।

5 :- कोई-न-कोई संस्कार व स्वभाव क□ वशीभूत होन□क□ कारण, समीप आत्मा हाईजम्प नही द□सकती।

==========

QUIZ ANSWERS

==========

प्रश्न 1 :- आज बाबा न□सफलता क□ सितारों की निशानी क्या बताई है?

उत्तर 1 :- सफलता क□ सितारों की निशानी बाबा यह बतात□हैं कि :-

❶ उनक□ हर संकल्प में दृढ़ता होगी कि सफलता अनक बार हुई है और अभी भी हुई पड़ी है। होनी चाहिए, होगी या नहीं होगी यह स्वप्न में भी कभी उनकी स्मृति में नहीं आयगा। बल्कि उन्हें शत-प्रतिशत निश्चय होगा कि सफलता हमारी हुई ही पड़ी है।

❷ उनक हर बोल की यह विशेषता होगी-कि व हर बात में निश्चय-बुद्धि होंग और उनक बोल में, ईश्वरीय सन्तान की खुमारी दिखाई देगी अर्थात् उनमें ईश्वरीय नशा दिखाई देगा।

❸ उनमें देह-अभिमान का नशा नहीं दिखाई पड़ेगा। उनक बोल द्वारा संशय बुद्धि वाला भी, निश्चय बुद्धि हो जायेगा; क्योंकि उन्हें एक तो ईश्वरीय खुमारी होती है और दूसरा उनका हर बोल शक्तिशाली होता है। उनक बोल साधारण व व्यर्थ नहीं होत।

❹ उनका हर कर्म तो श्रेष्ठ होता ही है, लेकिन उनमें विशेषता यह होगी कि उनक हर कर्म द्वारा, अनेक आत्माओं का पथ-प्रदर्शन होगा। जो गायन भी है कि 'जैस कर्म हम करेंग, और उनका हर कर्म शिक्षा-स्वरूप होगा। इसको ही कहा जाता है-समर्थ-कर्म।

❺ ऐस संकल्प, बोल और कर्म वाला ही हर बात में सदा स्वयं स सन्तुष्ट होगा। सन्तुष्ट होन क कारण ही वह हर्षित भी होगा लेकिन उस हर्षित बनाना नहीं पड़ेगा बल्कि वह स्वत: ही सदा हर्षित होगा।

❻ ऐस सफलतामूर्त स अन्य आत्मायें भी सदा संतुष्ट रहेंगी, ऐस सदा हर्षित आत्मा को देख कर, अन्य आत्मायें भी, उनक प्रभाव स, दु:ख व उलझन की लहर स बदल कर हर्षित हो जावेंगी।

❼ ऐस ही सफलतामूर्त क हर्ष की किरणें, अन्य आत्माओं पर भी पड़ती हैं अर्थात् जैस कि बाप क संग का रंग, एक सेकण्ड में अनुभव करत

हो। ऐसे ही सफलता के सितारों के संग का रंग, अन्य आत्माओं को भी अनुभव होता है। यह है सफलतामूर्त व सफलता के सितारों की निशानी।

प्रश्न 2 :- लक्की सितारों प्रति बाबा आज क्या बता रहे हैं?

उत्तर 2 :- बाबा बताते है :-

❶ लक्की सितारे विशेष रूप से बाप के स्नेही, बाप के चरित्र, बाप के सर्व-सम्बन्धों के रस में ज्यादा मग्न रहते हैं।

❷ उनके संकल्प भी ज्यादा शक्तिशाली नहीं, लेकिन स्नेही होंगे।

❸ उनकी स्मृति रूप में भी बाप के मिलन और बाप के चरित्रों का ज्यादा वर्णन रहेगा।

❹ उनकी बीज रूप स्टेज कम रहेगी, लेकिन अव्यक्त मिलन, अव्यक्त स्थिति और स्नेह भरी रूह रूहान इसमें वे ज्यादा रहेंगे।

❺ ऐसी आत्माओं को स्नेह के कारण और संग तोड़, एक संग सर्व-सम्बन्ध निभाने के कारण ही सहयोग प्राप्त होता है। उन्हें बाप के सहयोग के कारण मेहनत कम करनी पड़ती है और प्राप्ति अधिक होती है।

❻ वह सदैव ऐसा अनुभव करते हैं कि मेरा लक्क अच्छा है; मुझे बाप की एकस्ट्रा मदद है और मैं तो पार हो ही जाऊंगी।

❼ मधुबन जैसा स्नेह किसी का भी नहीं है। सहयोग होने के कारण, उनके बोल फलक के होते हैं।

प्रश्न 3 :- आपके भक्त कौन बनेंगे, किस हिसाब से आपके भक्त बनेंगे? इस महावाक्य के द्वारा बाबा ने बच्चों को कौन सा गुह्य राज बताया है?

उत्तर 3 :- बाबा बताते हैं :-

❶ जिन आत्माओं को, जिन श्रेष्ठ आत्माओं द्वारा व निमित्त बनी हुई आत्माओं द्वारा कुछ-न-कुछ प्राप्ति का अनुभव होता है, उन द्वारा कोई साक्षात्कार होता है और या कोई वरदान प्राप्ति का अनुभव होता है, तो उस आधार पर, वह उनकी प्रजा और भक्त बनते हैं।

❷ जो समीप आत्माएं होती हैं; जिन आत्माओं का, बाप से सम्बन्ध भी जुट जाता है और साथ-साथ बाप द्वारा वर्से के अधिकारी भी बनते हैं, वे रॉयल फैमिली में आते हैं।

❸ एक ही समय में, हरेक आत्मा, अपनी रॉयल फैमिली बना रही है अर्थात् वह भविष्य सम्बन्ध व राजघराना भी बना रही है; प्रजा भी बना रही है और भक्त भी बना रही है।

प्रश्न 4 :- सफलतामूर्त बनने के लिए बाबा कौन सी दो बातों को धारण करने की बात कर रहे हैं?

उत्तर 4 :- बाबा बताते सफलतामूर्त बनने के लिए आज आपको दो बातें सिर्फ दो शब्दों में सुनाते हैं। दो शब्द धारण करना तो सहज है ना? सदैव सर्व-आत्माओं के प्रति, सम्पर्क में आते हुए, सम्बन्ध में आते हुए और सम्पर्क में आते हुए अपनी शुद्ध भावना रखो। शुभ भावना और शुद्ध कामना। चाहे आपके सामने कोई भी परीक्षा का रूप आवे और चाहे डगमग करने के निमित्त बन कर आवे लेकिन हरेक आत्मा के प्रति आप शुभ कामना, और शुद्ध भावना यह दो बातें हर संकल्प, बोल और कर्म में लाओ, तो आप सफलता के सितारे बन जायेंगे।

प्रश्न 5 :- प्रजा और भक्त इन दोनों में अन्तर क्या होगा?

उत्तर 5 :- बाबा बताते हैं कि

❶ प्रजा को असल ज्ञान और योग की प्राप्ति करने की पुरुषार्थी होगी, वह सम्बन्ध में समीप नहीं होगी, लेकिन दूर के सम्बन्ध में जरूर होगी।

❷ वह मर्यादा पूर्वक जीवन बनाने में, यथायोग्य तथा यथा-शक्ति पुरुषार्थी होगी

❸ जो दूसरे सब्जेक्ट्स हैं-धारणा और ईश्वरीय सेवा- उनमें भी यथा-शक्ति सहयोगी होगी, लेकिन सफलतामूर्त नहीं होगी। इसीलिए वह सोलह कला सम्पूर्ण नहीं बन पाती।

❹ कोई-न-कोई संस्कार व स्वभाव क वशीभूत होन क कारण, निर्बल आत्मा हाईजम्प नहीं द सकती। इसलिय रॉयल परिवार में व राजकुल में आन क बजाय वह रॉयल प्रजा बन जात हैं। रॉयल कुल नहीं, रॉयल प्रजा

❺ भक्त जो होंग वह कभी भी, स्वयं को अधिकारी अनुभव नहीं करेंग॥ उनमें अन्त तक, भक्तपन क संस्कार रहेंग और व सदा मांगत ही रहेंग -आशीर्वाद दो, शक्ति दो, कृपा करो, बल दो, स्कार व आधीन होन क संस्कार उनक या दृष्टि दो आदि। ऐस माँगन क संस्कार लास्ट तक दिखाई देंग॥

❻ व सदैव जिज्ञासु रूप में ही रहेंग॥ उन्हें बच्चपन का नशा मालिकपन का नशा, और मास्टर सर्वशक्तिमान् का नशा धारण करात भी व धारण नहीं कर सकेंग॥ व थोड़ में ही राज़ी रहन वाल होंग यह है भक्तों की निशानी।

FILL IN THE BLANKS:-

{ सूर्य, अधिकारी, संस्कार, भक्तपन दिलशिकस्त, नॉलज, किरणें, निर्बल, साक्षात्कार, सम्मुख, हर्षित, संतुष्ट, उम्मीदवार सितार दर्पण, उम्मीद }

1 बाप-दादा _____ क _____ द्वारा तीन स्ट जिस का _____ करात हैं।

नॉलज / दर्पण / साक्षात्कार

2 _____ क समीप व _____ जान वाल क ऊपर, न चाहत भी _____ पड़ती रहती हैं।

सूर्य / सम्मुख / किरणें

3 वह इस निश्चय स भी कभी डगमग नहीं होंग कि मैं बाप का हूँ। लकिन _____ होन क कारण, व कभी-कभी _____ हो जात हैं। यह हैं _____

निर्बल / दिलशिकस्त / उम्मीदवार सितार

4 वह सदा _____ नहीं रहगा और वह सदा _____ भी नहीं रहगा। लकिन _____ कभी नहीं छोड़गा।

हर्षित / संतुष्ट / उम्मीद

5 भक्त जो होंग वह कभी भी, स्वयं को अनुभव नहीं करेंग उनमें अन्त तक, क रहेंग

अधिकारी / भक्तपन / संस्कार

सही गलत वाक्यो को चिन्हित करो-

1 :- भक्त कभी भी डायरक्ट बाप का कनक्शन में आने की इच्छा नही रखते हैं। 【✖】

भक्त कभी भी डायरक्ट बाप का कनक्शन में आने की शक्ति नहीं रखते।

2 :- लक्ष्य सफलता का सितारा बनने का रखना है; क्योंकि बाप-समान बनना है। सिर्फ बाप स्नही बनने से खुश नहीं रहना है। 【✔】

3:- न चाहते हुए भी हरक्त निमित्त बनी हुई आत्माओं की प्रजा और भक्त बनते ही रहते हैं। 【✔】

4 :- प्रजा कक्षल ज्ञान और योग की प्राप्ति करने की पुरुषार्थी होगी, वह सम्बन्ध में दूर नही होगी। 【✖】

प्रजा कक्षल ज्ञान और योग की प्राप्ति करने की पुरुषार्थी होगी, वह सम्बन्ध में समीप नहीं होगी।

5 :- कोई-न-कोई संस्कार व स्वभाव क वशीभूत होन क कारण, समीप आत्मा हाईजम्प नही द सकती【✖】

कोई-न-कोई संस्कार व स्वभाव क वशीभूत होन क कारण, निर्बल आत्मा हाईजम्प नहीं द सकती।